Edit with WPS Office

साहित्य संचयन

पाठ : गिरगिट

(कहानी)

पृष्ठ संख्या : 81

Edit with WPS Office

गिरगिट

-अंतोन चेखव

Edit with WPS Office

अंतोन चेखव

(1860-1904)

दक्षिणी रूस के तगनोर नगर में 1860 में जन्मे अंतोन चेखव ने शिक्षा काल में ही कहानियाँ लिखना आरंभ कर दिया था। उन्नीसवीं सदी का नौवाँ दशक रूस के लिए एक कठिन समय था। यह वह समय था जब आज़ाद खयाल होने से ही लोग शासन के दमन का शिकार हो जाया करते थे। ऐसे समय में चेखव ने उन मौकापरस्त लोगों को बेनकाब करती कहानियाँ लिखीं जिनके लिए पैसे और पद ही सब कुछ था।

चेखव सारे संसार के चहेते लेखक माने जाते हैं। इसका सबसे बड़ा कारण यह है कि इनकी नज़र में सत्य ही सर्वोपरि रहा। सत्य के प्रति निष्ठा, यही चेखव की धरोहर है। चेखव की प्रमुख कहानियाँ हैं- गिरगिट,क्लर्क की मौत, वान्का, तितली, एक कलाकार की कहानी, घोंघा, इओनिज, रोमांस, दुलहन। प्रसिद्ध नाटक हैं- वाल्या मामा, तीन बहनें, सीगाल और चेरी का बगीचा।

Edit with WPS Office

Edit with WPS Office

गिरगिट

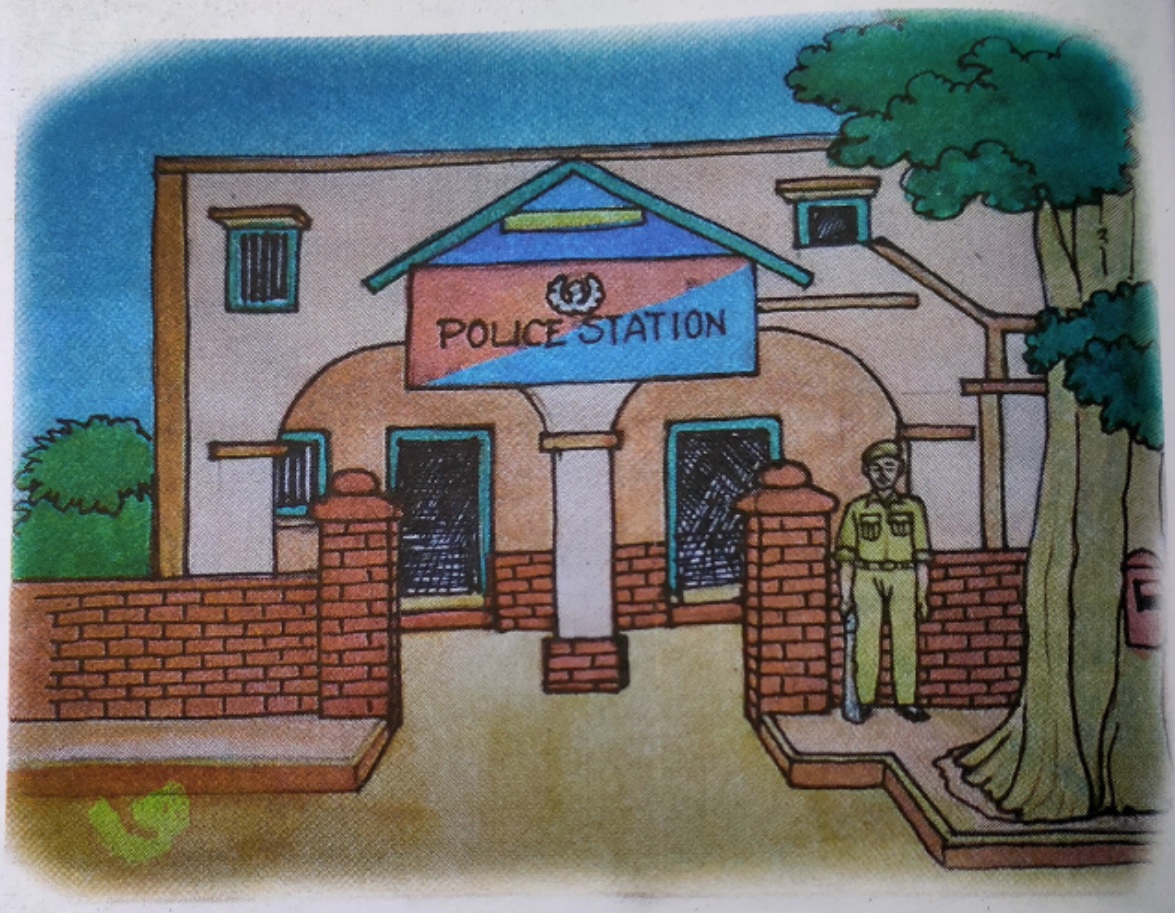

पुलिस का दारोगा ओचुमेलोव नया ओवरकोट पहने, हाथ में एक बंडल थामे बाजार के चौक से गुजर रहा है। लाल बालों वाला एक सिपाही हाथ में टोकरी लिये उसके पीछे-पीछे चल रहा है। टोकरी जब्त की गयी झड़बेरियों से ऊपर तकभरी हुई है। चारों ओर खामोशी ..... चौक में एक भी आदमी नहीं.....दुकानों व शराबखानों के भूखे जबड़ों की तरह खुले हुए दरवाजे ईश्वर की सृष्टि को उदासी भरी निगाहों से ताक रहे हैं। यहाँ तक कि कोई भिखारी भी आस-पास दिखाई नहीं देता हैं।

'अच्छा! तो तू काटेगा? शैतान कहीं का!' ओचुमेलोव के कानों मे सहसा यह आवाज आती है। 'पकड़ लो छोकरे! जाने ना पाये! अब तो काटना मना है! पकड़ लो आ...आहा!'

Edit with WPS Office

कुत्ते के किकियाने की आवाज सुनाई देती है। ओचुमेलोव मुड़ कर देखता है कि व्यापारी पिचूगिन की लकड़ी की टाल में से एक कुत्ता तीन टाँगो पर भागता हुआ चला आ रहा है। एक आदमी उसका पीछा कर रहा है-बदन पर छींट की कलफदार कमीज, ऊपर वास्कट और वास्कट के बटन नदारद। वह कुत्ते के पीछे लपकता है और उसे पकड़ने की कोशिश में गिरते- गिरते भी कुत्ते की पिछली टाँग पकड़ लेता है। कुत्ते की-की-की और वही चीख-''जाने न पाये!'' दोबारा सुनाई देती है। ऊँघते हुए लोग गरदनें दुकानों से बाहर निकालकर देखने लगते हैं, और देखते-देखते एक भीड़ टाल के पास जमा हो जाती है मानों जमीन फाड़ कर निकल आयी हो

'हुजूर! मालूम पड़ता है कि कुछ झगड़ा-फसाद है!' सिपाही कहता है।

ओचुमेलोव बायीं ओर मुड़ता है और भीड़ की तरफ चल देता है। वह देखता है कि टाल के फाटक पर वही आदमी खड़ा है, जिसकी वास्कट के बटन नदारद हैं।

वह अपना दाहिना हाथ ऊपर उठाये भीड़ को अपनी लहूलुहान उँगली दिखा रहा है। उसके नशीले चेहरे पर साफ लिखा लगता है. 'तुझे मैं सस्ते न छोड़ूँगा' और उसकी उँगली भी जीत का झंडा लगती है। ओचुमेलोव कंधों से भीड़ को चीरते हुए सवाल करता है, 'तुम उँगली क्यों ऊपर उठाये हो? कौन चिल्ला रहा था?'

'हुजूर! मैं चुपचाप अपनी राह जा रहा था,' खूकिन अपने मुँह पर हाथ रख कर खाँसते हुए कहता है। ''मित्री मित्रिच से मुझे लकड़ी के बारे में कुछ काम था। एकाएक, मालूम नहीं क्यों. इस कमबख्त ने मेरी उँगली में काट लिया.....हुजूर माफ करें, पर मैं कामकाजी आदमी ठहरा...और फिर हमारा काम भी बड़ा पेचीदा है। एक हफ्ते तक शायद मेरी यह उँगली काम के लायक न हो पायेगी। मुझे हरजाना दिलवा दीजिए। और, हुजूर, यह तो कानून में भी कहीं नहीं लिखा है कि ये मुए जानवर काटते रहें हम चुपचाप बरदाश्त करते रहें..... अगर सभी ऐसे ही काटने लगें,तो जीना दूभर हो जाये, हुँह....अच्छा ....'ओचुमेलोव गला साफ करके, त्योरियाँ चढ़ाते हुए कहता है, 'ठीक है.....अच्छा, यह कुत्ता है किसका? मैं इस बात को यहीं नहीं छोड़ूँगा। यों कुत्ते को छुट्टा छोड़ने का मजा चखा दूँगा! लोग

Edit with WPS Office

कानून के मुताबिक नहीं चलते, उनके साथ अब सख्ती से पेश आना पड़ेगा! ऐसा जुरमाना ठोकूँगा कि दिमाग ठीक हो जायेगा बदमाश का! फौरन समझ जायेगा कि कुत्तों और हर तरह के ढोर-डंगर को ऐसे छुट्टा छोड़ देने का क्या मतलब है। मैं ठीक कर दूँगा, उसे! येल्दीरिन !' सिपाही को सम्बोधित कर दारोगा चिल्लाता है, 'पता लगाओ कि यह कुत्ता है किसका, और रिपोर्ट तैयार करो! कुत्ते को फौरन मरवा दो! यह शायद पागल होगा.....मैं पूछता हूँ यह कुत्ता है किसका?

'यह शायद जनरल झिगालोव का हो!' भीड़ में से कोई कहता है।

'जनरल झिगालोव का? हुँह.....येल्दीरिन, जरा मेरा कोट तो उतारना....ओफ, बड़ी गर्मी है.....मालूम पड़ता है कि बारिश होगी। अच्छा, एक बात मेरी समझ में नहीं आती कि इसने तुम्हें काटा कैसे?' ओचुमेलोव खूकिन की ओर मुड़ता है। 'यह तुम्हारी उँगली तक पहुँचा कैसे? यह ठहरा जरा सा जानवर और तुम पूरे लहीम-सहीम आदमी! किसी कील-वील से उँगली छील ली होगी और सोचा होगा कि कुत्ते के सिर मढ़ कर हरजाना वसूल कर लो। मैं खूब समझता हूँ! तुम्हारे जैसे बदमाशों की तो मैं नस-नस पहचानता हूँ!'

'इसने उसके मुँह पर जलती हुई सिगरेट लगा दी थी, हुजूर!' बस, यूँ ही मजाक में और यह कुत्ता बेवकूफ तो है नहीं, उसने काट लिया। ओछा आदमी है यह हुजूर!'

'अबे! काने! झूठ क्यों बोलता है? जब तूने देखा नहीं, तो झूठ उड़ाता क्यों है? और सरकार तो खुद समझदार है। सरकार खुद जानते हैं कि कौन झूठा और कौन सच्चा। और अगर मैं झूठा हूँ, तो अदालत में फैसला करा लो। कानून में लिखा है .....अब हम सब बराबर हैं, खुद मेरा भाई पुलिस में है.....बताये देता हूँ.....हाँ.....'

'बन्द करो यह बकवास।'

'नहीं,यह जनरल साहब का नहीं हैं,' सिपाही गम्भीरतापूर्वक कहता है 'उनके पास ऐसा कोई कुत्ता है ही नहीं, उनके पास तो सभी कुत्ते शिकारी पोंटर हैं।'

Edit with WPS Office

Edit with WPS Office

'तुम्हें ठीक मालूम है।'

'जी, सरकार।'

मैं भी जानता हूँ। जनरल साहब के सब कुत्ते अच्छी नस्ल के हैं, एक से एक कीमती कुत्ता है उनके पास। और यह ! यह भी कुत्ते जैसा कुत्ता है, देखो न! बिल्कुल मरियल खारिश्ती है। कौन रखेगा ऐसा कुत्ता? तुम लोगों का दिमाग तो खराब नहीं हुआ? अगर ऐसा कुत्ता मास्को या पीटर्सबर्ग में दिखायी दे, तो जानते हो क्या हो? कानून की परवाह किये बिना एक मिनट में उसकी छुट्टी कर दी जाये! खूकिन! तुम्हें चोट लगी है और तुम इस मामले को यूँ ही मत टालो.....इन लोगों को मजा चखाना चाहिए। ऐसे काम नहीं चलेगा।'

'लेकिन मुमकिन है, जनरल साहब का ही हो.....' कुछ अपने आपसे सिपाही फिर कहता है, 'इसके माथे पर तो लिखा नहीं है। जनरल साहब के अहाते में मैंने कल बिल्कुल ऐसा ही कुत्ता देखा था।'

'हाँ, हाँ, जनरल साहब का ही तो है!' भीड़ में से किसी की आवाज आती है।

'हुंह.....येल्दीरिन, जरा मुझे कोट तो पहना दो.....हवा चल पड़ी है, मुझे सरदी लग रही है.....कुत्ते को जनरल साहब के यहाँ ले जाओ और वहाँ मालूम करो। कह देना कि इसे सड़क पर देख कर मैंने वापस भिजवाया है.....और हाँ, देखो, यह भी कह देना की इसे सड़क पर न निकलने दिया करें.....मालूम नहीं कितना कीमती कुत्ता हो और अगर हर बदमाश इसके मुँह में सिगरेट घुसेड़ता रहा, तो कुत्ता तबाह हो जायेगा। कुत्ता बहुत नाजुक जानवर होता है.....और तू हाथ नीचा कर, गधा कहीं का! अपनी गन्दी उँगली क्यों दिखा रहा है? सारा कुसूर तेरा ही है.....'

'यह जनरल साहब का बावर्ची आ रहा है, उससे पूछ लिया जाये। ए प्रोखोर! इधर तो आना भाई! इस कुत्ते को देखना, तुम्हारे यहाँ का तो नहीं है?'

'अमाँ वाह! हमारे यहाँ कभी भी ऐसे कुत्ते नहीं थे।'

'इससे पूछने की क्या बात थी? बेकार वक्त खराब करना है,' ओचुमे लोव कहता है, ''आवारा कुत्ता है। यहाँ खड़े-खड़े इसके बारे में बात करना समय बरबाद करना है। कह दिया न आवारा है, तो बस आवारा ही है। मार डालो और काम खत्म'।

'हमारा तो नहीं है, प्रोखोर फिर आगे कहता है, 'जनरल साहब के भाई साहब का कुत्ता है। हमारे जनरल साहब की ग्रेहाउंड के कुत्तों में कोई दिलचस्पी नहीं है, पर उनके भाई साहब को यह नस्ल पसन्द है.....'

'क्या? जनरल साहब के भाई साहब आये हैं? व्लादीमिर इवानिच?' अचम्भे से

Edit with WPS Office

Edit with WPS Office

ओचुमेलोव बोल उठता है, उसका चेहरा आह्लाद से चमक उठता है। 'जरा सोचो तो! मुझे मालूम भी नहीं! अभी ठहरेंगे क्या?'

'हाँ.....'

'जरा सोचो, वह अपने भाई से मिलने आये है.....और मुझे मालूम भी नहीं कि वह आये है। तो यह उनका कुत्ता है? बड़ी खुशी की बात है। इसे ले जाओ.....कुत्ता अच्छा.....और कितना तेज है.....उसकी उँगली पर झपट पड़ा ! हा-हा-हा.....बस, बस, अब काँप मत। गुर्र-गुर्र..... शैतान गुस्से में है.....कितना बढ़िया पिल्ला है.....'

प्रोखोर कुत्ते को बुलाता है और उसे अपने साथ ले कर टाल से चला जाता है। भीड़ खूकिन पर हँसने लगती हैं।

'मैं तुझे ठीक कर दूँगा,' ओचुमेलोव उसे धमकाता है और अपना ओवरकोट लपेटता हुआ बाजार के चौक के बीच अपने रास्ते चल देता है।

-अन्तोन चेखव

Edit with WPS Office